

धर्म जीवन

अप्रैल 2004

- ☆ श्री देव गुरु भगवान के सम्बन्ध में मेरी आंखों देखी घटनाएं
- ☆ अहं का अनर्थ
 - ☆ अभिशाप बन गए धार्मिक त्योहार
 - ☆ पाठकों के विचार
 - ☆ व्यक्तिगत सफाई
- ☆ शुभ संग्राम
- ☆ पिता जी की बरसी

श्री देव गुरु भगवान के सम्बन्ध में मेरी आंखों देखी घटनाएं

देव समाज के संस्थापक और एकमात्र सत्य, विज्ञान मूलक और सार्वभौमिक धर्म देव धर्म के शिक्षक परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आविर्भाव एक अद्वितीय और अलौकिक आविर्भाव है। वह देव शक्तियों से विभूषित हैं अर्थात् उनके देव आत्मा में (1) सत्य के लिए पूर्णांग अनुराग (2) शुभ के लिए पूर्णांग अनुराग (3) मिथ्या के लिए पूर्णांग घृणा और (4) अशुभ के लिए पूर्णांग घृणा शक्तियों का विकास हुआ है। इन्हीं देव शक्तियों से उनमें देव जीवन का प्रकाश हुआ है। उनका प्रत्येक व्यवहार, प्रत्येक चिन्ता और क्रिया इन्हीं देव शक्तियों या देव भावों से परिचालित होती है, इस लिए उनके जीवन की प्रत्येक घटना अपना अद्वितीय महत्व रखती है और उनके देव जीवन का दर्शन करती है।

यह आंखों देखी घटनाएं भगवान देवात्मा के फिलासफर शिष्य विशेष सम्मान के योग्य श्री मान पी. वी. कनल जी. एम. ए. एल. एल. बी. द्वारा लिखी गई हैं और भगवान देवात्मा की इस पृथ्वी पर वर्तमानता में ही देव समाज की पत्रिकाओं में पहले पहल (Science grounded religion) में समय समय में छपती रही हैं। इसलिए यह प्रामाणिक हैं और देव जीवन की घटनाओं का प्रामाणिक होना अपना अनुपम महत्व रखता है।

इन घटनाओं के विषय में श्रीमान कनल जी लिखते हैं :-

“मैं जीवन के उन्हीं क्षणों को सर्वश्रेष्ठ क्षण समझता हूँ जिनमें मुझे देवात्मा के चरणों में खड़े होने और उनकी देव वाणी सुनने का अवसर मिला है कि जो देव वाणी देव जीवन के स्रोत की वाणी है। उनके शब्द जो देव जीवन के स्रोत से निकले हैं, इतने शक्तिशाली हैं और उनमें सत्य की इतनी गहरी छाप है कि वह न केवल मेरे मन को ज्योतिर्मान करते हैं किन्तु मुझ में नया प्राण संचार करते हैं। मैंने सदा यह अनुभव किया है और कहा है कि ऐसा प्रत्येक उपदेश और शब्द जो देवात्मा ने किसी भी विषय पर अपने शिष्यों को सम्बोधित करके उच्चारण किया है तुरन्त लिखा जाना चाहिए और हम सब को स्थाई और लगातार रूप से अनुप्राणित करने के लिए सुरक्षित कर लिया जाना चाहिए। मुझे उनके देव जीवन की अनेक घटनाओं में से थोड़ी घटनाएं याद हैं, जो मैं अपने साथी सेवकों और अधिकारी आत्माओं के लिए लिख रहा हूँ और जो उनके देव जीवन का दर्शन कराती हैं।”

इन घटनाओं का हिन्दी में छपना अधिकारी पाठकों के लिए एक अमूल्य आत्मिक निधि है।

प्रकाशक

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 4

अप्रैल 2004

सम्पादक

डा. विनोद खेड़ा

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सह सम्पादिका

सुरजीत बराड़

अहं का अनर्थ

रूहानी रोगों में से अहं सब से बढ़कर सूक्ष्म, भयंकर और घातक है। गुरु महाराज की शिक्षा के अनुसार मनुष्य में यह जन्मजात आता है और उमर के साथ बढ़ता जाता है।

यह इसलिए सबसे अधिक घातक है, क्योंकि यह मनुष्य को अपने ही प्रति अंधकार और मिथ्या विश्वास में रखता है। और मिथ्या विश्वास तो फिर भी सत्य की रोशनी में दिखाई दे जाते हैं और उनसे छुटकारा भी सुलभ हो जाता है, परन्तु अपने प्रति मिथ्या विश्वास को देखना सबसे कठिन है, इसलिए हम सब मानव संतान सारी उम्र इस अंधकार के शिकार रहते हैं और अपने प्रति ही पूर्ण अज्ञात रहते हैं।

घमंड अपनी “मैं” के प्यार को कहते हैं। हम अपने आप को बेहद प्यार करते हैं। अपने आपको झूठ मूठ सचाई से सैंकड़ों गुणा बढ़कर बड़ा, योग्य, महान और ठीक देखते, जानते, मानते और विश्वास करते हैं। अपनी महान, अक्ल, शक्ल, विद्या, बुद्धि, वाक्य शक्ति, अपने विचार, ख्याल, राय और अपने विश्वास आदि को सदा ठीक,

सुन्दर, निर्दोष और आला रूप में देखते और विश्वास करते हैं। अपने सम्बंध में यह पूर्ण झूठा विश्वास ही घमंड या अहंकार कहलाता है।

“मैं” का प्यार एक अजब जोरदार नशे का भूत है। इसके असर के नीचे हमेशा अपनी कीमत हकीकत से अधिक और दूसरों की कीमत हकीकत से बेहद कम आंकते हैं, देखते और विश्वास करते हैं।

जैसे एक घोर शराबी महाराजा रणजीत सिंह जी को हीरे जवाहारात से सुसज्जित हाथी पर सवार देखकर भरे जलूस में चिल्लाकर बेझिझक कह रहा था, “ओ, कट्टे वाले, बता इस कट्टे का क्या लेना है?” नशे में वह एक कंगाल भी धनी और व्यापारी बना बैठा था, और महाराजा जो हीरे जवाहारातों से सजे हाथी पर बैठे थे, उसे साधारण कट्टा बेचने वाले लग रहे थे। जब अगली सुबह नशा उतरने पर उसे महाराजा के सामने पेश किया गया, तो उसने महाराजा और अपनी हकीकत को पहचाना और पुकारने लगा, “महाराज! रात वाले व्यापारी तो लद गए।”

अहं का नशा, शराब के नशे से असंख्य गुणा अधिक ज़हरीला, लगातार रहने वाला और भयानक होता है। अहं का नशा कभी उतरता ही नहीं। परन्तु प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। यह प्रत्येक मनुष्य की कहानी है, इस घेरे से बाहर निकलना उसके लिए असम्भव के करीब है।

घमंड के नशे के अधीन अपने ऊपर और दूसरों के ऊपर, अनर्थ का होना और इस प्रकार मनुष्य के लिए अपना और दूसरों का अथाह नुकसान करना अवश्यम्भावी है।

इसलिए गुरु महाराज ने फरमाया था कि मनुष्य सब ही पागल हैं, जो पागलखाने में बंद हैं, वह ज़रा अधिक पागल हैं, परन्तु जो बाहर हैं वह भी पागल हैं, केवल दर्जों का फर्क है। घमंड के नशे में मनुष्य बिल्कुल पागल बन जाता है। वह अंधा, उल्टा दृष्टा और मिथ्याचारी बन जाता है। और ऐसी भयानक अवस्था को वो देख भी नहीं सकता है।

जिस प्रकार एक शराबी ने महाराज को कट्टे वाला बता कर उस पर घोर अनर्थ किया, उनका घोर अपमान किया, निरादर किया, उनकी पोज़ीशन को गलत देखा, उनसे लाभ उठाने के स्थान पर हानि उठाने के लिए लाचार हो गया, उसी प्रकार घमंड के नशे में चूर मनुष्य अक्सर अपने संपर्क में आने वालों पर पैर पैर पर घोर अनर्थ करते हैं, उनका घोर अपमान वा निरादर करते हैं, उनके अधिकारों का अपहरण करते हैं, उन पर जुल्म करके उन्हें सताते और तड़पाते हैं।

एक एम. ए. पास जन ने अपने अनुभव के आधार पर गहरे दुख के साथ बताया कि वह नौवीं कलास में पढ़ते थे और एक शहरी बच्चे की हमदर्दी के भाव से इंगलिश की पढ़ाई में सहायता करते थे।

बच्चे के पिता ऐसा चाहते थे। वह उच्च शिक्षित जन जब बच्चे को पढ़ाते हुए कठिन शब्द का अर्थ बताते, तो वह बच्चा अपने आपको बहुत होशियार और बुद्धिमान विश्वास करता था, वह प्रश्न करता कि मैं कैसे यकीन करूं कि जो अर्थ आप बता रहे हो वह सही है, तो शिक्षक उसको Dictionary दिखाते, और इस प्रकार बहुत सारा समय बर्बाद हो जाता, इस प्रकार वह बच्चा अपनी हानि करता और एक अपने से योग्य, बुद्धिमान और महान शिक्षक का अपमान करके उन पर जुल्म करता। अपने उपकारी और मुफ्त सेवादार का उसे कुछ भी लिहाज़ नहीं रहता था।

इस प्रकार एक और लड़के को यह शिक्षक मुफ्त पढ़ाने लगे, उसने कहा कि जिस प्रकार मैं चाहता हूं आप उसी प्रकार पढ़ाओ। शिक्षक ने कहा कि मैं वैसे ही पढ़ाने को तैयार हूं, परन्तु फिर पास करवाने की मेरी कोई जिम्मेवारी नहीं। परन्तु वह नहीं माना और वह कभी दसवीं पास नहीं हो सका। इस बच्चे ने अपने आपको ठीक और योग्य विश्वास किया और अपने मेहरबान और हमदर्द, योग्य और सेवाकारी को साधारण, तुच्छ और बुद्धि ही विश्वास किया। इस प्रकार एक परोपकार करने वाले पर अनर्थ किया। घमंड का भाव मनुष्य की अपनी हानि सबसे अधिक करता है।

गुरु महाराज ने फरमाया कि नेचर के विकास क्रम में नाना अस्तित्वों के भीतर जो सुन्दर, श्रेष्ठ, सराहनीय और उच्च गुणों का विकास हुआ है, घमंडी मनुष्य उनके गुणों और सुन्दरता की महिमा देखने के अयोग्य होता है। और वह अपने भीतर श्रद्धा के सुन्दर भाव को पैदा नहीं कर सकता। घमंड विकास क्रम का बोधी और विश्वासी नहीं बनने देता। ओह! कैसा महा अनर्थ!!

एक एक शारीरिक रोगी बड़े बड़े डाक्टरों को खातिर में न लाकर महा हानि उठाता है। एक हाई कोर्ट के जज साहिब को टी. बी. हो गई। लहौर के एक बहुत योग्य डाक्टर ने उन्हें सलाह दी कि वह जल्दी पहाड़ पर चले जाएं तो इस बिमारी से अभी बच सकते हैं। परन्तु उनके अहं ने उस नेक सलाह को नहीं मानने दिया। कुछ महीने बाद वह पहाड़ पर चले भी गए, परन्तु तब तक बिमारी इतनी बढ़ चुकी थी कि वह बच न सके।

एक और बहुत सूझवान जन के अंगूठे में कांटा लग गया, वह ज़हर इतना फैल गया कि डाक्टर ने अंगूठा काट देने की सलाह दी, फिर पैर तक ज़हर फैल गया और आखिर सारी टांग ही कटवानी पड़ी। हम अपने से सूझवान, योग्य जनों की भी सलाह नहीं मानते और अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मारते हैं। इस प्रकार महा हानियां उठाते हैं।

मनुष्य की जितनी अधिक योग्यताएं बढ़ती हैं, उतना ही घमंड भी बढ़ता जाता है। एक एक आलम, डाक्टर, वैज्ञानिक, अमीर, उच्च पदधारी, बलवान, योद्धा आदि दूसरों की महानता देखने के अयोग्य होता जाता है।

मेरे एक सहपाठी बहुत दुबले पतले थे और मैंने व्यायाम आदि करके अपने शरीर को खूब गठित किया हुआ था, वह इसकी बहुत सराहना करते। परीक्षा के दिनों में भी मैं सैर और व्यायाम करता रहा और वह पढ़कर न केवल पास हुए, परन्तु प्रथम रहे और लैकचरार लग गए और मैं तैयारी न होने पर परीक्षा में ही उस साल नहीं बैठा। उन्होंने मुझे सदेशा भेजा कि तुम मेरे पास आ जाओ, मैं तुम्हें पढ़ा दूंगा, पर मैं नहीं गया। फिर वह आई. ए. एस. बन गए। फिर Assistant commissioner परन्तु मैं उनकी इन योग्यताओं को

नहीं पहचान सका, अपने सुडौल शरीर को उनके दुबले पतले शरीर के मुकाबले बढ़िया देखकर इतराता रहा। मेरे घमंड ने एक ओर एक योग्य जन के प्रति श्रद्धा खून करवाया और दूसरी ओर मेरी महा हानि की। घमंड किस कदर हानिकारक!

गुरु महाराज की रोशनी में मुझे यह कुछ समझ आई कि इस महा घमंड द्वारा मैंने दूसरों को खातिर में न लाकर उनका घोर अनादर किया है और अपना नाश किया है। अहं से परिचालित होकर अपनी रोम रोम उपकारी माता को उल्टे रूप में देखा। अपनी शिक्षा आदि के कारण अपने आपको बहुत बड़ा महसूस करता रहा। माता को कड़वे और कठोर बोल बोलना, उनको खराब और अपने आपको ठीक विश्वास करना, उनको बात बात पर लताड़ना, तड़पाना। अपनी जीवन साथी को हकीर समझना, अपने बहन भाईयों को घटिया समझना, अर्थात् घमंड भाव से भरकर अपने उपकारियों हितकारियों के दिलों को दुखाना, कमजोरों और गरीबों पर भड़कना, ऐसा करके खुद भी तड़पना औरों को तड़पाना, यह व्यवहार करके कितना दोषी बनता रहा। उनको अब याद करके शर्मसार होता हूं। परन्तु देवात्मा की ज्योति के बिना मेरा यह भयानक रूप किसी प्रकार भी दिखाई नहीं दिया।

एक सभा में एक एम. ए. पास जन ने बताया कि “मैं ईमानदार हूं, रिश्वत नहीं लेता, मेरी इस खूबी ने मेरे को इतना घमंडी बना दिया कि मैं किसी बड़े से बड़े अफसर को भी खातिर में नहीं लाता, सबका अपमान कर देता हूं। मेरे घमंड ने न मुझे अच्छा अफसर बनने दिया, न अच्छा मताहत। न मुझे अच्छा पति बनने दिया न अच्छा बाप। मैं पिता जी से भी लड़ता हूं। अपने भाईयों का भी अच्छा भाई नहीं बन सकता। अपनी पत्नि से हमेशा अपनी बात मनवाता

हूं। मेरे डर के कारण बच्चों की अच्छी परवरिश भी नहीं हो सकी। मैं ईमानदार होने की रट लगाकर पागल हो गया। मेरे घमंड ने मुझे कहीं का नहीं छोड़ा। किस प्रकार एक एक गुण ही मनुष्य को कितना अंधा बना देता है।

एक एक सेवक अपनी योग्यताओं के कारण किसी उच्च कर्मचारी के रूप को नहीं देख सकता। वह Loose talk करता है। किसी ने कहा था “मैं फलां कर्मचारी को देखा है, वह पकौड़े खाता हुआ मर गया। वह किसी कर्मचारी को अपने से धन, विद्या वा सांसारिक पदार्थों में हीन देखकर उनके सच्चे त्याग वा सेवाओं को नहीं देख सकता। जिन्होंने जवानी में अपने सुख स्वार्थों की दुनिया को त्यागा और जिन्होंने गुरु की कृपा से कितने मनुष्यों के जीवनो को बदला, पाप छुड़वाए, सम्बंध बेहतर किए, उनकी कुछ भी महिमा नहीं देखता। किस ने कितने मन्दिर बनवाए, संस्थाओं में प्रशंसनीय काम किए, साधन पाठ विचार द्वारा जिन्होंने अपने जीवन संवारे, आदर, अनादर की परवाह नहीं की, सुख दुख की परवाह नहीं की और विरोधी हालात में भी सेवा में रत रहे, प्रचार आदि द्वारा गुरु कारज के गौरव को बढ़ाया। जब किसी का यह रूप अपने अहं के कारण छुप जाता है, तो स्वाभाविक ही एक एक निम्न योग्यताएं रखने वाला सेवक भी अपने आपको महान और ऐसे कार्यकर्त्ता को तुच्छ अनुभव करने लगता है। कोई धन में, शिक्षा में, योग्यताओं में बड़ा है, यह न समझकर अपने अहं को तृप्त करता है। यदि वह ऐसे जनों के प्रति, जिन्होंने सचमुच ही उपरोक्त कार्य किए हैं, उनको बड़ा समझता, तो उनसे कुछ लाभ प्राप्त कर सकता था, परन्तु वह तो उन्हें सिखाने वाला, सभाएं कराने वाला और उपदेशक बनकर महा हानि उठाता है।

गुरु महाराज ने बार बार फरमाया है कि एक एक साधक को ऐसे जनों के प्रति सम्मान वा श्रद्धा अनुभव करनी चाहिए, जिन्होंने सच्चे अर्थों में भगवान के मिशन में अधिक सेवा की है और वास्तव में उच्च फल पैदा किए हैं, परन्तु जो ऐसा नहीं कर सकता, वह पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रति श्रद्धा पैदा नहीं कर सकता।

यह घमंडी मनुष्य तो साधारण मनुष्यों को ही नहीं देवात्मा को भी अपने अहं का शिकार बना लेता है। एक एक घमंडी जन ने डाकुओं को परिवर्तित करके नेक इंसान बनाने वाले देवात्मा को ही डाकुओं का सरदार कहा। उन्हें खूनी, हत्यारा झूठा, कपटी न जाने क्या कुछ कहा, उन पर मुकदमे चलाए, उन्हें कचहरियों में घसीटा। देवात्मा पर क्या क्या अनर्थ इस घमंडी, अहंकारी जन द्वारा नहीं हुए।

देवात्मा को तड़पाया सताया केवल बाहर के जनों ने ही नहीं बल्कि उनके द्वारा जन्म लेने और प्रतिपालित होने वाले बच्चों ने भी सताया। उन्होंने अपने आपको बड़ा और देवात्मा को छोटा देखा। देवात्मा को उनके ही द्वारा अथाह हित पाने वाले जनों ने अपनी नीच प्रकृति से महा दुख पहुंचाए।

घमंड और अनर्थ का चोली दामन का साथ है। घमंड मनुष्य के लिए शाप है। इसका कुछ भी बोध हो जाना और उससे बचने के मार्ग पर पड़ जाना मनुष्य का महा सौभाग्य है। देवात्मा के प्रभावों को सच्चे अर्थों में पाने से ही यह सम्भव है।

(बलदेव सिंह)

अभिशाप बन गए धार्मिक त्योहार

संसार में कोई ऐसा इंसान नहीं होगा जो सुखशान्ति और आराम से जीना नहीं चाहता होगा। सामान्य इंसान की बात तो दूर, कथित भगवान के साए में रहने वाले पडेपुजारी भी इसी कतार में हैं। सुखशान्ति के लिए भगवान से मन्तव्य मानने वालों की कमी नहीं लेकिन कभी कभी यही जिन्दगी भर के लिए अभिशाप बन जाता है।

गणेश उत्सव और नारियल पूर्णिमा का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सजावट और झाकियां बनाने में करोड़ों रूपए फूंक दिए गए। इन्हें दिखाने और भगवान का दर्शन कराने के नाम पर श्रद्धालुओं से रकम भी वसूली जाती है। श्रद्धालु दर्शकों ने मन्तव्य मानने और पूजा पाठ करने में भी कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी कई लोगों को ऐसा सदमा लगा जो जीते जी भूल नहीं पाएंगे। हर साल की तरह किसी सुहागन की मांग उजड़ी तो किसी का कुलदीपक ही बुझ गया। ऐसे लोगों में धार्मिक त्योहार अभिशाप बनते जा रहे हैं।

मुम्बई की मेघावाड़ी पुलिस के अनुसार, अंधेरी (पूर्व) पूनम नगर में गणेश विसर्जन करने के लिए 25 वर्षीय मुकेश खारवी तालाब पर गया था। तालाब पर आने वाले श्रद्धालु गणेश विसर्जन कर घर वापस लौट गए लेकिन मुकेश खारवी वापस नहीं लौटा। दूसरे दिन तालाब में उस की लाश तैरती हुई नजर आई। अग्निशमन दल के कर्मचारियों ने लाश को बाहर निकाल कर उस के परिवार वालों को सौंप दिया। घर की खुशी पल भर में बदल गई।

मुम्बई में ही डोबिवली (पश्चिम) स्थित सिद्धार्थ नगर कोपर रोड परिसर में रहने वाले छात्र माणिक विजय खोपकर, यूसुफ शेख और राजेश शिंदे के घर वाले आज भी गणेश उत्सव के दिन अपने अपने

बच्चों को याद कर आंसू बहाते हैं। इन परिवारों पर तब परेशानियों का पहाड़ टूट पड़ा था जब गणेश विसर्जन के दौरान जा रही मूर्तियों को देखने के प्रयास में तीनों ट्रेन के नीचे आ गए थे।

नारियल पूर्णिमा के दौरान समुद्र के किनारे सैंकड़ों की तादाद में श्रद्धालु पहुंचते हैं। मछुआरों में ऐसी मान्यता है कि बरसात खत्म होते ही नारियल पूर्णिमा उन के भाग्य का संदेश ले कर आती है। इस के बाद से ही वे मछली मारने के लिए अपनी नौका ले कर समुद्र में जाते हैं। नारियल पूर्णिमा के दिन समुद्र की पूजा इसलिए करते हैं कि समुद्र देवता उन के जीवन की रक्षा करें। 16 वर्षीय जितेन्द्र काशिनाथ पाटील के लिए नारियल पूर्णिमा का दिन अभिशाप ही साबित हुआ।

पूजा के बाद जितेन्द्र पाटील समुद्र में उतरा ही था कि लहरों के साथ डूबने लगा। उसे डूबता देख कर बचाने के लिए संजय और मनोज भी पहुंचे पर ऊंची ऊंची लहरों के बीच संजय व मनोज भी डूबने लगे। किनारे खड़े गांव वालों ने समुद्र में रस्सी फेंकी जिसे पकड़ कर संजय और मनोज बाहर आ गए। लेकिन किसी भी तरह जितेन्द्र पाटील को बाहर नहीं निकाला जा सका। रात लगभग 12 बजे जितेन्द्र पाटील का शव किनारे आ गया।

मुम्बई महानगर पालिका के अनुसार वर्ष 2001 में लगभग 4,515 सार्वजनिक और 45,185 घरेलू गणेश की मूर्तियां स्थापित की गई थीं। मनपा ने इस त्योहार की व्यवस्था पर 1,17,93,365 रुपये खर्च किए। आश्चर्य तो यह है कि धार्मिक उत्सव की व्यवस्था पर इतनी बड़ी रकम खर्च करने के बाद भी मनपा अपने घाटे का रोना रोती है। अनुमान है कि इस साल भी

आंकड़ा करोड़ रूपए से ऊपर का होगा। जबकि मजदूर अपने हक की मांग को ले कर मनपा से लड़ रहे हैं।

भड़वे और बड़वे

मुम्बई शहर ही नहीं बल्कि देश के अन्य शहरों में भी भड़वे और बड़वे की कमी नहीं है। भड़वे वेश्याओं की दलाली करते हैं जबकि बड़वे भगवान और भक्तों के बीच के दलाल हैं। वे भगवान से मिलाने का शार्टकट रास्ता दिखाते हैं। ऐसे लोगों को महाराष्ट्र में बड़वे कहा जाता है। इस के एवज में बड़वे रकम भी वसूलते हैं। गरीब भोलेभाले श्रद्धालु घंटों तक दर्शन करने के लिए कतार में खड़े रहते हैं। लेकिन जो लोग भगवान को देखने के लिए अधिक रकम देते हैं उन्हें कतार में लगने की कोई जरूरत नहीं पड़ती। भगवान की प्रतिमा तक पहुंचने के लिए अमीर और गरीब की अलग अलग

कतारें क्यों लगवाई जाती है ताकि लोग ज्यादा पैसे देने को तैयार हो जायें।

जिंदगी में सफल बनने के लिए जोखिम उठाना बुरी बात नहीं है। लेकिन महज पूजा पाठ के लिए जान जोखिम में डालना कहां की अक्लमंदी है। यदि लोग जान जोखिम में डाल रहे हैं तो यह पंडों के प्रचार का कमाल है। विडंबना यह है कि दिनदहाड़े गुंडेबदमाश किसी की बहनबेटी की इज्जत के साथ खिलवाड़ करते हैं तब कोई भी उसकी रक्षा में जल्दी सामने नहीं आता। लेकिन पूजा पाठ करने में जान भले ही चली जाए फिर भी लोग सब से आगे रहना चाहते हैं और ऐसा हो भी क्यों न। आखिर पंडों की पूरी जमात जेबें खाली करने वाले भक्तों को रातदिन अपने प्रचार से फुसलाती जो रहती है।

पाठकों के विचार

एक पुरानी सेवका लिखती हैं -

‘धर्म जीवन’ के पुराने पर्थे भी भेजने की कृपा करें इस पत्रिका में दिलचस्प ज्ञानवर्धक तथा उच्च प्रेरणाओं के स्रोत लेख होते हैं। जिन्हें पढ़ने से बहुत लाभ होता है।

मैं आपका धन्यवाद करना चाहती हूं कि आप मुझे Regular “धर्म जीवन” और “हिंदू मंत्रो” भेज रहे हो जिसके लेख पढ़कर मन खुश हो जाता है। जब धर्म जीवन आता है उसी time पढ़ लेती हूं लगता है बहुत छोटा है जल्दी खत्म हो गया।

इसमें जो लेख “पढ़ो और शिक्षा लाभ करो”, “जोखिम उठाने वाला सफल होता है” और “मां दी हूं” लेख पढ़े। सभी लेख ही बहुत अच्छे लगे और मैं उसी time अपने बेटे को Phone कर देती हूं कि देख समाज की शिक्षा निराली है चाहे कितना भी पढ़ लो परन्तु इस प्यारी समाज के साथ जुड़े रहना है और यह धर्म जीवन उसको भेजने के लिए भी कहती हूं। सचमुच ऐसा लगता है कि धर्म जीवन पढ़ कर दुनिया की knowledge, देव समाज के बारे में कहां कहां संग्राम किया गया, सब सभाओं का निचोड़ पढ़ कर मेरी सभा हो जाती है। बीमारी के कारण घर में ही रहना पड़ता है ऐसा लगता है हम समाज से cut off हो गये कहीं देव समाज वाले हम को भूल न जायें। सब कितना अध्यात्मिक वैज्ञानिक और मानसिक लाभ उठा रहे हैं हम आप की सभाओं से वंचित हैं। मां का उपकारी रूप जो सुरजीत बहन जी ने लिखा, कितना प्रभावशाली है। मुझे अपने माता जी के उपकारों को याद करके रोये बिना न रहा गया। रोज अपनी माता जी को याद करती हूं। पिता जी का एक ही उपकार सबसे बड़ा यह आता है कि देव समाज में ले आये नहीं तो गांव में गलते सड़ते। उपकारों को हम नीच ने कहां याद करना था।

☆☆☆☆

बहुत बहुत सम्मान के योग्य, श्रीमान सभापति जी,

सत्कार सहित सत्य देव की जय।

श्रीमान जी मैं अपने आप को बहुत भाग्यशाली महसूस करता हूँ। मेरा यह अनुभव इसलिए है कि मेरे माता पिता जी से मुझे अच्छी विरासत मिली है और पूर्ण रूप से वैष्णु शुरूआत हुई है। दूसरी बात दसवीं कक्षा पास करने के साथ ही ऐसे गुरु की संगत में बैठ कर उसका सेवक बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। तीसरी बात श्रीमान बलदेव सिंह जी का हमारे परिवार के साथ सम्बंध व सचमुच हमदर्दी का होना। मैं महसूस करता हूँ कि अगर यह सब कुछ मुझे शुरू से ही प्राप्त न होता तो मेरा जीवन कुछ और ही होता।

माता पिता जी के सम्बंध में पिछले कई सालों से श्रीमान जी की सभाएं सुनता आ रहा हूँ व हमेशा ही अपने अंदर तबदीली पाई है। गुरु महाराज की निराली शिक्षा से निराली रोशनी मिलती है व भला होता है। यह रोशनी कहीं और से नहीं मिल सकती। सभा से मिली रोशनी के कारण माता पिता का बड़ा सुन्दर रूप सामने आता है। उनके उपकारों की गिनती नहीं हो सकती। मेरे माता पिता जी ने मेरी छोटी आयु में ही एक जानलेवा बीमारी का ईलाज करवाया। बहुत ही संग्राम करके, धन खर्च करके, रातों को जाग कर दुखों में गुजरकर मुझे बीमारी से मुक्त करवाया। मैं भली भांति महसूस करता हूँ कि माता पिता ने एक बार नहीं, दो बार जन्म दिया है। इस सम्बंध में मैं एक बार नहीं, हजार बार जन्म लेकर भी माता पिता जी का कर्जा नहीं उतार सकता।

माता पिता जी अब इस दुनिया में नहीं रहे। अगर मेरे माता पिता मेरे पास होते तो मैं उनकी देखभाल व सेवा करके अपना फर्ज पूरा करता व धन्य धन्य होता व उनका कर्जा उतारने का यत्न भी करता। यह तो मेरे लिए सिर्फ पछतावा ही है। गुरु महाराज की कृपा से उनकी पैदा की संगत में बैठकर पिछले लम्बे समय से माता पिता जी को सवेरे प्रणाम करता हूँ। इसी वातावरण में बैठते बैठते और कई उपकारियों की तरफ भी बहुत ध्यान जाता है। उपकारी बेशुमार हैं। बहुत से उपकारी फिर भी ध्यान में नहीं आ सकते। कुछ समय तक मैं अपने आप को Self-made समझता रहा परन्तु अब यह बात साफ हो गई है कि कोई भी इंसान self made नहीं होता।

श्रीमान जी ने सभा में बताया कि अपने आप को देखना सब से मुश्किल है। परन्तु अपने आप को देखे बिना अपना भला नहीं होता। मैंने ही महसूस किया है, अक्सर महसूस करता हूँ कि मनुष्य में कमियाँ हैं, नीचता है जो मनुष्य का विनाश करती है और विकास के रास्ते में विघ्न डालती है। मेरे में गुस्से की प्रकृति है जो लगभग मुझे परेशान करती है। इससे बचने की मुझे बेहद जरूरत है। सभाओं में बैठकर मिथ्या से काफी हद तक छुटकारा मिला है। मोटे मोटे पापों से बहुत रक्षा हुई है। मैं अपने बहिन भाईयों के सम्बंध में भी संगत की कृपा से और बढ़िया ढंग से अच्छे व्यवहार करने के लिए प्रयत्न करता रहता हूँ। यह सब मेरे ऊपर मेरे गुरु महाराज व विशेष सम्मान के योग्य श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान गुरबख्श सिंह जी व श्रीमान बलबहादुर सिंह जी की कृपा है। मुझे श्रीमान जी बहुत ही सुन्दर रूप नजर आता रहता है। मैं दिल की गहराई से इनका आदर करता हूँ। इनकी मेरे परिवार पर विशेष कृपा रही है। मेरे पास वह शब्द नहीं हैं, मेरी योग्यता नहीं कि मैं उनकी वह तस्वीर खींच सकूँ जिस प्रकार वह असल में खुद हैं।

मैं कामना करता हूँ कि श्रीमान जी को नेचर लम्बी आयु प्रदान करे व तन्दरूस्ती में मालो माल रहें। इनका स्नेह, मेहरबानियाँ व इनकी कृपा हमारे पर हमेशा रहे। मुझे गुरु महाराज की संगत हमेशा प्राप्त रहे व रोशनी मिलती रहे। मैं गुरु की संगत व शिक्षा का लाभ उठाता रहूँ। मैं कोई ऐसा व्यवहार या क्रिया न करूँ कि जिससे गुरु की शान घटती हो। मैं सदा गुरु का रह सकूँ।

धन्यवाद

तेज राम कल्याण

व्यक्तिगत सफाई

स्वस्थ शरीर के लिए जहां संतुलित भोजन, शुद्ध हवा, पानी की आवश्यकता है, वहां पर व्यक्तिगत सफाई का भी बहुत बड़ा महत्व है। अपने शरीर की ठीक ढंग से सफाई रखकर, हम एक ओर अच्छे स्वास्थ्य को प्राप्त करते हैं, दूसरी ओर बहुत सी बिमारियों से निजात पा सकते हैं। बिमारियां अधिकतर किटाणुओं से उपजती हैं और यह किटाणुओं से बचाव हमारे चौतरफा वातावरण और शरीर की सफाई पर निर्भर है।

व्यक्तिगत तौर पर अपने शरीर को साफ सुथरा रखने से बिमारियों की रोकथाम तो होती है, इसके साथ साथ आपकी चमक दमक आपको सोसाइटी में एक सम्मान प्राप्त करने का कारण भी बनती है। साथ सुथरा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में एक विशेष आकर्षण रखता है। आपके व्यक्तित्व में आकर्षण न होने से कई बार आपकी योग्यताओं के बावजूद आपको तिरस्कार का केन्द्र बनना पड़ता है। इसके लिए हम व्यक्तिगत सफाई को कई भागों में बांट सकते हैं :-

बालों की सफाई :- साफ और अच्छी प्रकार कंधी किए हुए बाल क्या पुरुष और क्या स्त्रियों के लिए सुन्दरता और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। घने बालों में मिटटी और पसीने आदि से गंद जमा हो जाती है। हमारे भी Glands तेल छोड़ते हैं, तेल से मिलकर धूल मिटटी बालों को बहुत गंदा कर देते हैं।

बालों को कम से कम सप्ताह में दो बार किसी अच्छे शैम्पू या किसी भी तरह साफ करना चाहिए, परन्तु किसी शुष्क साबुन से नहीं धोना चाहिए। इनकी जड़ों को उंगलियों से अच्छी प्रकार मलना चाहिए। हल्के गर्म पानी से साफ करने के बाद में ठण्डे पानी से धोना चाहिए।

जहां तक बालों में तेल लगाने का प्रश्न है, तेल हमेशा अच्छी तरह लगाकर एक घण्टे के बाद बाल धोने चाहिए। बाद में तेल लगाने से तेलिये बालों में मिटटी धूल जम जाती है, और सिकरी आदि पैदा हो जाती है। तेल से बालों को कोई ताकत नहीं मिलती, बालों को ताकत बालों की जड़ों से जो खून संचार होता है, उससे मिलती है।

दूसरा बालों को दो बार दिन में कंधी करनी चाहिए और हर व्यक्ति की कंधी अलग होनी चाहिए और इसे साफ करते रहना चाहिए।

दांतों की सफाई :- दांतों का हमारे स्वास्थ्य के साथ बहुत महत्वपूर्ण सम्बंध है।

1. दांतों को दो बार एक सुबह और एक सोने से पहले ब्रश करना अति आवश्यक है। सोने से पहले ब्रश सुबह से भी अधिक आवश्यक है। इसके अतिरिक्त यदि आप मिठाई, गुड़ आदि खाते हो या बच्चे चाकलेट खाते हैं, तो ब्रश करना बहुत आवश्यक है, नहीं तो मीठा किटाणु पैदा करके दांतों को खराब करता है। अमेरिका जैसे सभ्य देश में बहुत ही कम लोगों के दांत सही दिखेंगे क्योंकि बचपन से ही चाकलेट, कोल्ड ड्रिंक्स से दांत खराब हो जाते हैं, अब वही चलन हमारे देश में आरम्भ हो गया है।
2. बच्चों को यदि चाकलेट देना ही है तो हफ्ते में एक बार फिक्स कर दो और बाद में ब्रश करवा दो। हमारे निकट एक परिवार रहता है जिनका बच्चा 7-8 वर्ष का है और उसके दांत कीड़े ने खा लिए हैं, अब भी जब देखो उसके दांत में चाकलेट या ऐसी कोई न कोई चीज़ होगी, माता

पिता यह कहकर संतुष्ट हो जाते हैं कि यह मानता नहीं।

3. ब्रश नरम होना चाहिए कभी सख्त ब्रश प्रयोग में न लायें।
4. ब्रश देखने में बेशक खराब न लगे फिर भी 3 महीने बाद ब्रश बदल लेना चाहिए।
5. किसी दूसरे का ब्रश कभी इस्तेमाल न करें।
6. ब्रश करने के बाद जबान को भी अवश्य साफ करें। इससे मुंह में से भी बदबू यदि आती है तो उसमें बहुत लाभ मिलता है।

कपड़ों की सफाई :- हर रोज़ कपड़े साफ सुथरे और प्रैस हुए हों। सिलवटों से भरे कपड़े पहनकर आप निकलेंगे तो सब तिरस्कार की दृष्टि से देखेंगे, आपको असभ्य समझा जाएगा। यह आवश्यक नहीं कि आपके बहुत कीमती कपड़ें हों और आपके पास ढेर से कपड़े हों। कम कपड़ों को भी आप सलीके से पहनकर आकर्षित करते रह सकते हैं। मैले और सिलवट भरे कपड़े पहनकर आप बस पर भी जाएंगे तो आपको कण्डक्टर भी अच्छा व्यवहार नहीं देगा। चाहे आप फिलासफर भी क्यों न हों। यह दुनिया का चलन है।

कपड़े पहन लेना और उन्हें सही प्रकार से बैठने उठने में प्रदर्शित करना भी एक गुण है। एक भद्र स्त्री को मैंने देखा कि स्टेज पर सम्मानित मेहमानों के साथ बैठने लगी तो बड़े भद्दे ढंग से पिछली तरफ से अपनी कमीज उठाकर बैठी, कईयों ने इसका असभ्य कहा। इस प्रकार कपड़ों का हमारे व्यक्तित्व को निखारने में भी बहुत बड़ा हाथ है और स्वास्थ्य के लिए भी आवश्यक है। विशेष रूप से नीचे डालने वाले कपड़े सूती, आरामदायक और प्रतिदिन बदलकर साफ पहनने चाहिए, नहीं तो हम कई बिमारियों को निमंत्रण देंगे।

आजकल नॉयलन आदि के कपड़े जिन्हें हम

Synthetic कहते हैं, अधिक प्रचलन में हैं, यह धोने आदि में सुविधाजनक भी हैं, परन्तु प्रायः और गर्मियों में अधिकतर इनमें पसीना आकर जब सूख जाता है तो उनमें से बदबू आने लगती है जो स्वयं मनुष्य यदि अधिक जागृत न हो, तो अनुभव नहीं करता, परन्तु दूसरों के लिए कई बार असहनीय हो जाती है। पश्चिमी देशों में तो यह बहुत ही असभ्यता की निशानी मानी जाती है। एक 2 बार एक 2 जन के कमरे में घुसने पर वहां सांस लेना कठिन हो जाता है। इसके लिए आज के सभ्यता के युग में बहुत ही सावधान रहने की आवश्यकता है। इसके लिए दिन में 2 बार नहाना और एक बार पहने हुए कपड़े विशेषकर कमीज दोबारा नहीं पहननी चाहिए। गर्मियों में जहां तक हो सके सूती कमीज हो, उसमें पसीना सूखने से कम बदबू आती है।

साधारणतः सभ्य समाज में ऐसी कुछ चीजों का पसीने वाले स्थानों पर प्रयोग किया जाता है, ताकि बदबू से बचा जा सके।

हाथों और पैरों की सफाई :- हाथों और पैरों की सफाई के लिए सर्वप्रथम नाखून नियमपूर्वक काटने चाहिए। तथा खाना आदि खाने से पहले हाथ अच्छी प्रकार साबुन से धोने चाहिए। पैरों की एड़िया फटी हुई नहीं होनी चाहिए। रात को गर्म पानी से पैर धोकर यदि एड़ियां फटी हुई हों तो वैसलीन वा क्रेम क्रीम आदि लगानी चाहिए। कभी कभी महंगे चप्पलों व जूतों में फटी एड़ियां आपको हंसी मजाक का कारण बना देती हैं।

इन छोटी छोटी बातों का ध्यान रखकर हम एक ओर बहुत सी बिमारियों से बचे रह सकते हैं, दूसरी ओर हमारे व्यक्तित्व में भी निखार आएगा।

(सुरजीत बराड़)

शुभ संग्राम

12 - 3 - 2004 सुबह 7 बजे के करीब श्रीमान बलदेव सिंह जी सुखदेव जी को साथ लेकर पदमपुर के लिए रवाना हुए!

12 - 3 - 2004 रात को 8 बजे के बाद एक सभा की गई। इसमें 30 जन आकर शामिल हुए। “जय-जय देवगुरु भगवान तुम्हारी महिमा अति महान” वाला भजन गाया गया। इसमें बताया गया कि धर्मों की भरमार है, धर्म के नाम पर समागम रखे जाते हैं। उसमें शामिल होने के लिए बड़ी संख्या में लोग शामिल भी होते हैं। धर्म क्या है? मगर इसका सही पता नहीं है। इस भ्रम में मनुष्य पड़ा हुआ है कि धर्म के नाम से कहलाने वाले समागमों में शामिल होने से धर्म आ जाएगा। धर्म आ रहा है या नहीं, इसका पैमाना उसके पास नहीं है। दुनिया अंधविश्वासों में फंसी हुई है। गुरु महाराज ने फरमाया है कि धर्म भले बनने का नाम है। उच्च भावों का नाम धर्म है। मनुष्य सब रोगी हैं। उसे आत्मा के रोग अपने आप दिखाई ही नहीं देते। भले बनने का पता सम्बंधों से चलेगा। हम अपने स्वार्थ के कारण सम्बंधों में नरक पैदा करते हैं। उच्च सम्बन्धों के बारे में फरमाया गया। बहन भाई, पति-पत्नी का सम्बंध क्या है? गुरु महाराज ऐसी रोशनी रखते हैं जो हमें सत्य धर्म का ज्ञान देते हैं। भगवान देवात्मा उन शक्तियों को नष्ट करते हैं जो हमारी जीवनी शक्ति का नाश करती हैं व उन शक्तियों को पैदा करते हैं जो जीवनी शक्ति की जान को बढ़ाती हैं। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

13 - 3 - 2004 सुबह 8:00 बजे एक सभा की गई। इसमें 25 जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि नेचर में विकास का नियम जारी है। विकास के क्रम में नई नई खोजें हो रही हैं। नई नई खोजें हैरानीजनक हैं। वह मनुष्य विकास का कभी

साथी नहीं बन सकता जो अपने पुराने विश्वासों, पुराने विचारों पर ही अड़ा रहे और नए विचारों पर चिंतन न करना चाहता हो व न करता हो। मनुष्य के दिमाग पर ताला लगने से उसका विकास सम्भव नहीं। कट्टर बनना दिमाग पर ताला लगाना है। उस गुरु ने मिथ्या का प्रचार किया है जिसने यह दावा नहीं किया कि साईंस में बढ़ने से मेरी शिक्षा में परिवर्तन आ सकता है। यही नियम हमारी धार्मिक शिक्षा में भी लागू होता है। गुरु महाराज ने धर्म की दुनिया में नई सच्चाईयां खोजी हैं। परन्तु हमने अपने दिमागों पर ताले लगाए हुए हैं। गुरु महाराज ने आत्मा की विज्ञान मूलक शिक्षा दी है। गुरु महाराज ने सत्य और शुभ के अनुरागी होने के कारण यह फरमाया कि साईंस के बढ़ने से मेरी शिक्षा साईंस की कसौटियों पर खरी न उतरे तो वह भी त्याग देने के योग्य है। इसीलिए हमें हमेशा अपने दिमागों को खुला रखना चाहिए। ऐसे सत्य व शुभ अनुरागी की शिक्षा परखना चाहिए व ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाना चाहिए।

रात को 8:30 एक सभा की गई। इसमें 30 के करीब जन आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि मनुष्य पशुओं से आया है। मनुष्य मानसिक शक्तियों के कारण जहां कई बातों के लिहाज से पशुओं से बहुत आगे निकल चुका है, वहां कई बातों के लिहाज से पशुओं से भी निम्न अवस्था में है। मोह के सम्बंध में मनुष्य पशुओं से भी घटिया दर्जे की अवस्था रखता है। पशु मनुष्य की तरह सुख के गुलाम नहीं हैं। कई पशु मनुष्य से सेवा के लिहाज से बहुत उपर का दर्जा रखते हैं। नेचर के विकास के क्रम में मनुष्य को गजब की शक्तियां मिली हैं व उसने हैरानी जनक खोजें की हैं। परन्तु इतनी मानसिक शक्तियां रखकर भी अपने आप को नहीं जान सकता। गुरु महाराज ने फरमाया है कि

मनुष्य सुख अनुरागी है, झूठ परायण है, पाप परायण है, हानिकारक जीव है। मनुष्य अपनी हानि करता है, दूसरों की हानि करता है। नेचर में बनो बनाओ, बिगाड़ो-बिगाड़ो का नियम जारी है। मनुष्य को अपना नीच रूप केवल देवात्मा की रोशनी में ही पता लग सकता है। देवात्मा जीवन ज्योति के सूरज हैं जो मनुष्य को असल रूप दिखा सकते हैं। देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा आए उच्च परिवर्तनों का ब्यान किया गया। ऐसे धर्म के सूरज को पहचानना हमारा सबसे बड़ा सौभाग्य है।

14-3-2004 सुबेर 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 20 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य अंधकार का जीव है। चार पक्षों में मनुष्य विशेष रूप से अंधकार में रहता है। मनुष्य को दूसरे की महानता, दूसरों के उपकार, दूसरों का दुःख दर्द व अपना आप उसे दिखाई नहीं देता। इस सच्चाई को पेश करने के लिए उदाहरण पेश किए गए। भगवान देवात्मा की रोशनी में जो परिवर्तन आए हैं, जिस प्रकार उनकी रोशनी में दूसरों की महानता, दूसरों की मेहरबानियां व दूसरों के दुःख दर्द नजर आते हैं वह अति विशेष हैं। कितने ही जनों के भीतर आए शानदार परिवर्तनों को उदाहरणों द्वारा जानने पर हाजरीन पर अच्छा प्रभाव पड़ रहा था कि भगवान देवात्मा को समझना व उनसे जुड़कर अपने अंधकार को दूर करना चाहिए।

रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 30 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि मनुष्य सुख अनुरागी प्रकृति रखता है। सुखों के पीछे भागता भागता पाप परायण झूठ परायण बन जाता है। धन के सुख अनुराग व उसके भयानक नतीजों के बारे में फरमाया गया। काम अनुराग व धन अनुराग कब तक हमारा साथ नहीं छोड़ते। अहं अनुराग की लालसा के बारे में बताया गया। विकास के नियम के बारे बताया कि विकास का साथी बनने से मनुष्य विकास पाता है व विनाश का साथी बनने से विनाश पाता है।

मनुष्य में तीन पक्षों में विकास हो रहा है।

शारीरिक विकास, मानसिक विकास, हार्दिक विकास! मनुष्य आत्मा के सही स्वरूप को नहीं समझ पाया। हमारे नीच सुखों ने हमें अपने पंजों में जकड़ा हुआ है। हमें उन सुखों को जानना चाहिए। विकास के नियम की उल्लंघना करने से हम पाप परायण बन जाते हैं। आत्मा के सही स्वरूप को समझने के लिए विशेष रोशनी की जरूरत है। नेचर के विकासक्रम में देवात्मा का आविर्भाव अद्वितीय है। उनके अंदर ऐसी विशेष रोशनी पैदा हुई है जो आत्मा का सत्य ज्ञान देते हैं। भगवान देवात्मा नीच शक्तियों से मुक्त करके उच्च शक्तियों का विकास करते हैं। “अंधकार ते पापां दा नाश कर्ता, चढ़िया आत्मिक जगत दा भान लोको। जिस ने जीवन दे कीमती तत्व खोजे, लभी धर्म दे लालां दी कान लोको” ऐसे देवगुरु को हम ज्यादा से ज्यादा पहचान सकें।

15-3-2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 25 के करीब जन शामिल हुए। सभा में बताया गया कि नेचर में परिवर्तन जारी है। परिवर्तन दो प्रकार का होता है, उच्च परिवर्तन और नीच परिवर्तन। हमारे अंदर हार्दिक परिवर्तन हमारे भावों के कारण आते हैं। धर्म भी नेचर के नियमों के अनुकूल होगा। धर्म भी परिवर्तन के नियम के अधीन है। मनुष्य को ज्यादातर नीच भाव चलाते हैं। हमारे में परिवर्तन भी ज्यादातर नीच ही आता है क्योंकि हमारे अंदर नीच भावों के बीजों की भरमार है। हमारे उच्च भावों को भी हमारे नीच कर्म समाप्त कर देते हैं। धर्म उच्च भावों का नाम है। उच्चभाव के द्वारा उच्च परिवर्तन आएगा। गुरु महाराज नेचर के विकासक्रम में ऐसी अद्वितीय शक्तियां लेकर पैदा हुए हैं जो अधिकारी आत्माओं के नीच भावों को नष्ट करके उच्च भाव पैदा करते हैं जिससे उसके अंदर उच्च परिवर्तन आता है। गुरु महाराज किस प्रकार शुक्रगुजार, दयावान व हानिपरिशोध करने वाला बनाते हैं, इसका हृदयस्पर्शीय ढंग से वर्णन किया गया। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें

30 जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि नेचर के दो रूप हैं, स्थूल व सूक्ष्म। स्थूल चीजें इन आंखों से दिखाई देती हैं परन्तु सूक्ष्म नहीं। इस नेचर में प्रभावों का खेल जारी है। यह असरों का नियम हमारे पर भी लागू होता है। हर पदार्थ अपने असर छोड़ता है। नीच असरों में रहकर मनुष्य की कैसे बर्बादी होती है उसका वर्णन किया गया। हमें बुरे असरों का बोध नहीं है। उसका अति भयानक रूप नजर नहीं आता। हमें उच्च जीवनधारियों के साथ ज्यादा से ज्यादा मेल स्थापन करना चाहिए। देवात्मा नेचर के विकास क्रम में ऐसी शक्तियां लेकर आए हैं जिन शक्तियों से ऐसे देवप्रभाव निकलते हैं, जिससे अधिकारी आत्माओं में आला परिवर्तन लाते हैं। देवात्मा के देवअसरो के आए परिवर्तनों के बारे में फरमाया गया। देवअसरो का कारज नीच जीवन मिटाने उच्च जीवन लाने का है। देव असरो के स्रोत पैदा हो चुके हैं। मनुष्य के लिए यह बहुत बड़े घाटे की बात है कि मनुष्य को अभी ऐसे अध्यात्मिक सूरज देवात्मा का पता नहीं है। ऐसे देवात्मा के देव असरो को ज्यादा से ज्यादा पहचान सकें। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

16-3-2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 25 के करीब जन आकर शामिल हुए। संस्कार, संग अभ्यास के सुख का दास बनकर मनुष्य अपनी हानि करता है। और हमारा विकास रुक जाता है। हमारे संस्कारों में कई नीच आदतें व नीच अभ्यास आ जाते हैं। हम उन संस्कारों में इतने लीन हो जाते हैं कि अच्छी योग्यताएं खोनी शुरू हो जाती हैं व अच्छे बुरे को समझने के योग्य नहीं रहते। हमारे संस्कारों में भिन्न भिन्न प्रकार की मिथ्याएं होने के कारण उसके भयानक नतीजे निकल रहे हैं। उन भयानक नतीजों के उदाहरण पेश किए गए। We are birds of cages हमारे दिमागों को ताले लगे हुए हैं। जिसने आत्म ज्ञान नहीं पाया, जिसने मिथ्या से बचने की कोशिश नहीं की, उसके भयानक नतीजों से भय नहीं खाया, उसका जीवन बर्बाद है। जिसने लोभ को नहीं खत्म किया,

उसने ज़िन्दगी में बहुत कुछ खो दिया है। देवात्मा विकास क्रम में पैदा हुए हैं, जिनकी रोशनी में हमारे संस्कारों, अभ्यासों व संग का भयानक रूप नजर आ सकता है व उनके बल से अधिकारी आत्माओं को इनसे छुटकारा मिल सकता है। भगवान देवात्मा के देवप्रभावों द्वारा हमारे दिमाग के ताले खुल जाते हैं। वह हमें आत्मा का सत्य ज्ञान पाने का अधिकारी बनाते हैं। अध्यात्मिक जगत के सूरज देवात्मा का आविर्भाव ही इनको कुचलने के लिए हुआ है। हम ज्यादा से ज्यादा ऐसे गुरु को पहचान सकें। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 25 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि पूजा पाठ, जप तप आदि का नाम धर्म नहीं है। धर्म केवल उच्च भावों से आता है। भाव क्या होता है? सुख के प्रति आकर्षण या दुख के प्रति विकर्षण को भाव कहते हैं। भाव दो प्रकार के होते हैं नीच व उच्च भाव। बड़े हुए भावों को अनुराग कहते हैं। नीच सुखों के भाव भी होते हैं। धर्म के भाव भी होते हैं। ईमानदारी, पवित्रता, इंसाफ, कर्तव्य परायणता आदि निम्न कोटि के भाव हैं, इनसे परोपकार नहीं निकलता। पैदा न हुए धर्म भाव, जीवन है सारा बर्बाद। शुक्रगुजारी के भाव के बारे में फरमाया गया। हमें दूसरे उपकारी नजर नहीं आते। जब दूसरे उपकारी नजर आए, उन्होंने क्या क्या उपकार किए हैं वह बार बार नजर आने चाहिए। उनका कर्जा छाती पर बोझ की न्याई लगने लगे व व्याकुल होकर उसके लिए कुछ करने लग जाएं अर्थात् उनके उपकारों को कर्जों की न्याई समझकर वापिस लौटाने लगे तो हम शुक्रगुजार बन जाते हैं। कृतघ्नता महापाप है। शुक्रगुजार आत्माओं के उदाहरण पेश किए गए। शुक्रगुजारी के बीज को बढ़ाने के लिए विशेष वातावरण की जरूरत है। नेचर के विकास के क्रम में धर्म के सूरज देवात्मा पैदा हो चुके हैं। जो शुक्रगुजार बनाते हैं। कितने ही नाशुक्रों को बदलकर शुक्रगुजार बनाया है। “परहित भाव हृदय उपजाओ धर्म मार्ग की दिग तब जाओ” गुरु

महाराज ने जिस प्रकार नाशुक्ले बेटों को शुक्रगुजार बनाया, उसका वर्णन किया गया। देवगुरु के देवप्रभावों द्वारा अधिकारी मनुष्यों के अंदर धर्म भाव पैदा होते हैं।

17-03-2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। अंधेरे से हानि, दुःख, विनाश होता है, इसके विषय में बताया गया। नेचर के अंदर कोई पक्षपात नहीं है। अंधेरे के भयानक फलों से कोई बच नहीं सकता। आत्मा क्या है? इसके बारे में बहुत अंधेरा है। उसके लाभ हानि का तो ज्ञान भी क्या होना था। आत्मा के बारे में दूसरे धर्मों के क्या विचार हैं उसके बारे में फरमाते हुए बताया कि देवधर्म आत्मा के बारे में सच्चाई ब्यान करता है। पौधे की जीवनी शक्ति के गुण व लक्षण के बारे में समझाया गया। उसके बाद पशुओं की जीवनी शक्तियों में क्या विशेषता है। उसका ब्यान बड़े सुन्दर ढंग से व सरल ढंग से समझाया गया। मनुष्य का मुख्य लक्ष्य आत्मा का ज्ञान पाना, उसको बचाना होना चाहिए न कि सांसारिक पदार्थों को इकट्ठे करना। आत्मा की जान को बचाने के लिए किसी पूजा पाठ की जरूरत नहीं है। आत्मा की नीच शक्तियों के बारे में बताया गया। नीच शक्तियां आत्मा की क्या हानियां करती है व कैसे करती हैं उसका ब्यान फरमाया आत्मा का सत्य रूप व उसकी परिभाषा को कोई जन नहीं जान पाया। पाप व पुण्य के बारे में फरमाया गया। आत्मा की खुराक क्या है? उच्च रोशनी और उच्च ताकत व विशुद्ध परोपकार। भगवान देवात्मा धर्म की दुनिया में सूरज पैदा हो चुके हैं। उनके अंदर ऐसी अद्वितीय योग्यताएं हैं जो अपनी रोशनी व तेज से नीच शक्तियों को खत्म करते हैं व उच्च भाव को पैदा करते हैं। ऐसे लासानी गुरु को ज्यादा से ज्यादा समझ सकें व अपने आत्मा को बचा सकें। रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 25 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि धर्म सम्बंधों में हैं। अगर सम्बंधों में मिठास नहीं, अगर सम्बंधों में स्वर्ग नहीं तो धर्म नहीं। धर्म उच्च भावों द्वारा सम्बंधों में जीने का नाम है। पति पत्नि की

शादी का आदर्श सम्बंध क्या होना चाहिए? उनको एक दूसरे के लिए स्नेह व सेवा से क्या शारीरिक, क्या मानसिक व क्या हार्दिक विकास करना चाहिए। हमारे सम्बंध उच्च भावों से मीठे व स्वर्गीय बनेंगे। नीच जीवनधारी मिलकर जब परिवार बनाते हैं, अपनी अपनी गतियों द्वारा महानरक उपजाते हैं। श्रीमान नौध सिंह जी की घटना बताई गई कि वह कैसे पति थे। गुरु महाराज की कृपा द्वारा लोगों के अंदर आए सम्बंधों में उच्च परिवर्तनों के कुछ उदाहरण दिए। गुरु महाराज का लक्ष्य ही यही है कि चारो जगत्तों में मेल उत्पन्न हो। ऐसे अद्वितीय गुरु को ज्यादा से ज्यादा जानकर सम्बंधों में स्वर्ग ला सकें। यह सभा बहुत प्रभावशाली रही।

18-03-2004 की सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें बताया गया कि दो शब्दों में हमारी समस्या व उसका हल क्या है। मैं हूं यह समस्या है, मैं भी हूं और दूसरे भी हैं यह उसका हल है। हमें हमेशा इस सच्चाई पर ध्यान देना चाहिए कि हम भी हैं और दूसरे भी हैं। हमें यह पता ही नहीं कि मैं हानिकारक जीव हूं। हम सब हानिकारक हैं परन्तु degree का फरक है। हमारे नीच सुखों के आकर्षण, नीच अनुराग ही हमारी हानि का मुख्य कारण हैं। नीच शक्तियों के भयानक दृश्य पेश किए गए। हमें अपने भाव चलाते हैं। इस ज्ञान के न होने से उसके भयानक फलों से नहीं बचा जा सकता। अपने आप को जानना सबसे उत्तम शिक्षा है। मनुष्य चाहता है कि मैं अपनी संतान को अच्छी से अच्छी खुराक व शिक्षा दे सकूं परन्तु उसका मुख्य लक्ष्य अपनी संतान को, उच्च हार्दिक पूंजी अर्थात् उच्च भाव देना होना चाहिए। देवात्मा के देवप्रभावों के द्वारा हमारी नीच शक्तियां नष्ट होती हैं व उच्च भाव योग्यता होने पर पैदा होते हैं। इन्हें पैदा करने के लिए हमें बल मिलता है। यहां से 415 रुपये के करीब दान व कुछ अखबारों का चंदा मिला। इसके बाद यह पार्टी केसुपुरा के लिए रवाना हुई।

18-03-2004 रात को 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 80 के करीब जन आकर शामिल

हुए। इसमें बताया गया कि नेचर के नियमों को जानना हमारे लिए बहुत जरूरी है व हितकर है। उन नियमों को न समझना, न जानना हमारे लिए हानिकारक है। नेचर के नियम को जानने से दिलेरी आती है। बीमारी कोई नहीं भेजता, न तो देवी-देवता, न परमात्मा, न कोई किस्मत। बताया गया है कि किस प्रकार एक एक पाखण्डी साधू लोगों को मूर्ख बनाकर फायदा उठाने की कोशिश करते हैं। नेचर के नियमों से बाहर कोई करामात, कोई शक्ति काम नहीं करती। सोना, धन आदि वस्तुएं किसी जादू टोने, मंत्र से दूगना नहीं होता। ऐसा होना नेचर के नियमों के विरुद्ध है। परन्तु मनुष्य अपने लालच के कारण अंधविश्वासों में फंसकर झूठे साधुओं की बातों में आकर हानि उठाते हैं। शरीर सम्बंधी नियमों के बारे में फरमाया गया कि किस प्रकार नियमों को जानकर एक एक रोग ठीक होता है। हमारे अस्तित्व पर यह नियम काम करता है कि अगर किसी ने भला बनना है, उसे भले वातावरण में, भले जनों की संगत में रहना होगा। संगत जिंदा भी होती है, मुर्दा संगत भी। जिंदा संगत वह संगत है जिससे मनुष्य में पहले से बेहतर आती है। गुरु महाराज का आविर्भाव नेचर में अद्वितीय है। गुरु महाराज के देवप्रभावों द्वारा आए उच्च परिवर्तनों का ब्यान किया गया। देवात्मा सच्चे पातशाह हैं जो सत्य के पूर्ण अनुरागी, झूठ के पूर्ण वैरागी, शुभ के पूर्ण अनुरागी, अशुभ के पूर्ण वैरागी धर्म की दुनिया में सूरज पैदा हो गए हैं जिनकी कृपा से अधिकारी आत्माओं में विशेष परिवर्तन आ रहा है। ऐसे गुरु के साथ जुड़ना व उनको पहचानना हमारा परम सौभाग्य है।

19-03-2004 सवेर 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 40 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि पशु अपने स्वभाव द्वारा कुछ कुछ बातें समझता है। मनुष्य पशुओं से विकसित हुआ है। बुद्धि शक्ति द्वारा मनुष्य ने नई नई खोजें करके चमत्कार किए हैं। मनुष्य की बुद्धि शक्ति भविष्य में भी नए नए चमत्कार करती रहेगी। गुरु महाराज ने फरमाया है कि

नेचर के विकास क्रम में बढ़ती विज्ञानमूलक शिक्षा में थोड़ा बहुत बदलाव आना जरूरी है। देव धर्म की शिक्षा विज्ञानमूलक है। गुरु महाराज ने सत्य अनुराग व शुभ अनुरागों में विकसित होकर फरमाया है कि मेरी शिक्षा भी साईस की विधि के अनुसार खरी न उतरे तो वह भी त्याग देने के योग्य है। गुरु महाराज की खोजी सच्चाईयों में से एक सच्चाई का ब्यान किया गया कि मनुष्य को उसके भाव चलाते हैं। ज्यादातर मनुष्य के अंदर नीच शक्तियां होती है और वही उसकी परिचालक शक्तियां बनती रहती हैं। किस प्रकार स्वाद का अनुराग, नशा अनुराग आदि नीच शक्तियों से मनुष्य अपने शरीर की तबाही करता है। उसका वर्णन किया गया। धन अनुरागी मनुष्य किस प्रकार अपनी वा दूसरों की तबाही करता है उसके बारे में फरमाया गया। मनुष्य आत्मघात क्यों करता है क्योंकि उसको अपनी नीच शक्तियों की समझ नहीं है। गुरु महाराज की रोशनी में हमें अपनी नीच शक्तियों की सोझी आती है। नीच भावों का भयानक रूप नजर आता है। उसका ब्यान किया गया। मनुष्य अगर अपनी नीच शक्तियों का असल रूप देख सके तो उसके लिए धर्म का रास्ता खुल जाता है। मनुष्य अपने आप अपने भावों को जान नहीं सकता। हमें ऐसी रोशनी की जरूरत है जहां पर हमें यह नजर आ सके कि हमारे अंदर नीच शक्तियां हैं व उनका भयानक रूप नजर आ सके। गुरु महाराज की रोशनी में यह विशेषता है कि उसमें मनुष्य की नीच शक्तियां व उसका भयानक रूप नजर आ जाता है।

19-03-2004 रात को 8 बजे के करीब सभा की गई। इसमें 90 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि नेचर की हर चीज असर छोड़ती है। लेकिन हमें यह असर दिखाई नहीं देते। हम मनुष्यों के अंदर से भी असर निकल रहे हैं। मनुष्य के अंदर से ज्यादातर नीच असर ही निकलते हैं। मनुष्य के अंदर नीच असरों के ग्रहण करने की शक्ति के कारण उसका अस्तित्व उजड़ता है। नीच असरों में जाकर

मनुष्य की क्या हालत बनती है, उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई को पेश किया गया। एक एक विद्यार्थी गलत संगत में पड़कर अपने लक्ष्य ही बदल लेता है। नीच प्रभावों में हमारे दिमाग की भी पेश नहीं चलती। गुरु महाराज की रोशनी व तेज के असरों से मनुष्य के जीवन में एक नई क्रान्ति आती है। देवअसुरों में मनुष्य के विकास का रास्ता खुल जाता है। गुरु महाराज अपने कर्मचारियों को नीच असुरों में जाने नहीं देते थे भले ही उनके सम्बन्धियों के असर क्यों न हो। नीच जीवन धारी से ज्यादा से ज्यादा बचें, पता ही नहीं उनकी संगत ने हमें कितना नुकसान दे जाना है। जो बागों में रहें सड़ांध का, उन्हें गंदगी का, जल्दी पता चल जाता है। गुरु महाराज के देवअसुरों में रह रहकर हमें नीच प्रभावों का पता चलने लग जाता है व उनका भयानक रूप नजर आना शुरू हो जाता है। देवअसुरों द्वारा हमारी जिन्दगियों में विशेष परिवर्तन आता है। उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई का ब्यान किया गया। जैसे हमारे अंदर से नीच जीवन से असर निकलते हैं, उसी तरह देवात्मा के अंदर से सत्य व शुभ के अनुरागों के असर निकलते हैं, पाप व मिथ्या के प्रति घृणा के असर निकलते हैं। ज्यादा से ज्यादा हमें सुन्दर, वातावरण, फूलों के वातावरण में रहना चाहिए। गुरु महाराज के प्रभावों ने डाकूओं के सरदारों को बदलकर सेवाकारी बना दिया। देवात्मा का आविर्भाव मिथ्या व पापाचार को खत्म करके सत्य व शुभ का राज लाना है। ऐसे अद्वितीय गुरु के दर को, उनके देवअसुरों को ज्यादा से ज्यादा समझ सकें। यह सभा प्रभावशाली रही।

20-03-2004 सुबह 8:30 बजे एक सभा की गई। इसमें 40 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि विद्या के बिना मनुष्य लगभग पशुओं के समान ही है। परन्तु धर्म के बिना मनुष्य पशुओं से भी घटिया है। इस सच्चाई को समझाने के लिए उचित उदाहरण दिए गए कि किस प्रकार मनुष्य मानसिक शक्तियां रखकर दूसरों को तबाह करने, दूसरों

की हानि करने के लिए सोचता रहता है व करता भी है। फरमाया गया कि किस प्रकार कई कुते मनुष्यों से ज्यादा परोपकार में सहयोग देते हैं व मनुष्य से कई पक्षों में ज्यादा गुण रखते हैं। अगर मनुष्य में धर्म है तो वह फरिश्ता है। वह धर्म क्या है जिससे मनुष्य फरिश्ता बन जाता है व पशुओं से ऊपर हो जाता है। वह धर्म है उच्च भाव! उच्च भावों से धर्म आएगा। श्रद्धा, शुक्रगुजारी, हमदर्दी व हानि परिशोध भावों से परोपकार होता है। शुक्रगुजारी के भाव के बारे में फरमाया गया। गुरु महाराज फरमाते हैं कि वह फूल तोड़ो जिसकी आपने सेवा की है। या जो सेवा करता है उसकी ईजाजत से। गुरु महाराज फरमाते हैं कि जो शख्स उपकार पाकर उसके लिए प्रतिउपकार नहीं करता वह हमारे सम्मुख पापी, कमीना व खुदगर्ज है। अगर हमारे अंग सही हैं अंधे, बहरे नहीं हैं तो इसमें दूसरों की मेहरबानियां हैं। शुक्रगुजार लोगों के उदाहरण दिए गए कि किस प्रकार एक एक जन क्या अपनी, क्या अपनी संतान की जान की परवाह भी नहीं करता। शुक्रगुजार के पास धर्म होता है। लेकिन हम में शुक्रगुजारी नहीं है। बनाया काम का तुमने, मैं काम आपके आउंगा, शुक्रगुजार बन जाओगे तो धर्म आएगा नहीं तो धर्म नहीं आएगा। धर्म धर्म-स्थानों में आने जाने से नहीं आएगा। धर्म उच्च भावों से आएगा। ईमानदारी, पवित्रता, श्रद्धा हमदर्दी आदि भावों से धर्म आएगा। जितने भाव गिनती में ज्यादा होंगे उतने ही हम ज्यादा धर्मवान हैं। गुरु महाराज अधिकारी आत्माओं को धर्मी बनाने का काम करते हैं अर्थात् उनके नीच भावों को खत्म करके उच्च भाव पैदा करते हैं। हम ऐसे गुरु के देवप्रभावों को पाकर धर्मवान बन सकें व ज्यादा से ज्यादा ऐसे गुरु को पहचान सकें।

20-3-2004 रात को 8 बजे एक सभा की गई। इसमें 150 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि दुनियां के जितने धर्म हैं वह पूजा पाठ, जप, तप का नाम धर्म समझते हैं। धर्म उच्च भावों अर्थात् सात्विक भावों का नाम है। भावों का पता

सम्बन्धों में लगता है। सम्बन्धों को त्यागने का नाम धर्म नहीं। नीच भाव सम्बन्धों को सही नहीं रहने देते। स्वार्थ के द्वारा सम्बन्ध कभी नहीं सही हो सकते चाहे विवाह के समय कितने बंधन मूल प्रतिज्ञाएं करवाई गई हो। उच्च भावों का अकाल पड़ा हुआ है। जब मतलब निकल जाता है तो हम दूसरों को पहचानते नहीं। उच्च भावों द्वारा सम्बन्धों में कितनी मिठास आती है उदाहरणों द्वारा इस सच्चाई को पेश किया गया। सम्बन्धों में जब हम यह मांग रखें कि हमारे लिए यह भी करे वह भी करे, तो इस प्रकार गर्जों द्वारा सम्बन्धों में घोर बिगाड़ पड़ता है। लोग घरों में बच्चों की तसवीर तो बहुत रखते हैं परन्तु माता पिता की फोटो कोई कोई ही रखता है। हमें माता पिता के जन्मदिन मनाने चाहिए न कि संतान के। अगर श्रद्धा, शुक्रगुजारी, हमदर्दी के भावों द्वारा सम्बन्ध होंगे तो उनकी दुनियां कुछ और ही होगी। गुरु महाराज उच्च भाव पैदा करने की योग्यता रखते हैं। उच्च भाव पैदा करके सम्बन्ध में स्वर्ग पैदा करते हैं। गुरु महाराज इसी दुनिया में ही स्वर्ग पैदा करना चाहते हैं। उनके देवप्रभावों द्वारा लोगों के अंदर आए उच्च परिवर्तनों के बारे में फरमाया गया। पति पत्नि को एक दूसरे के शारीरिक, मानसिक व हार्दिक सेवा में सहयोग देना चाहिए। ऐसे पापों व मिथ्या के शत्रु व सत्य और शुभ के अनुरागी पैदा हो चुके हैं, उनको ज्यादा से ज्यादा समझ सकें। देवात्मा हमें कैसे बेटे, कैसे भाई, कैसे पति-पत्नि व कैसे दूसरे जगतों का सम्बन्धी बनाते है वह एक अलग दुनियां है, एक अलग नजारा है, एक सुन्दर स्वर्गीय दृश्य बनता है व इसी धरती से स्वर्ग बनना शुरू होता है। ऐसे गुरु के साथ ज्यादा से ज्यादा जुड़ सकें व लाभ उठा सकें।

21-3-2004 की सुबह एक सभा की गई। इसमें 50 के करीब जन आकर शामिल हुए। इसमें बताया गया कि इंसान एक एक बात जिसमें उसकी भलाई है, अपना ले तो उसका बेहद भला होता है। अगर किसी बुराई या नशा आदि को अपना ले, तो उसका बहुत नुकसान होता है, विनाश होता है। जिस प्रकार एक

एक पानी की बूंद लगातार एक पत्थर पर पड़ती है तो उससे उस पत्थर पर भी छोटा सा सुराख हो जाता है, उसी प्रकार छोटी सी भी बुरी आदत हमारे लिए महाहानिकारक दुखों को पैदा करने वाली व विनाशकारी होती है। नेचर के नियमों को जानना बहुत हितकर है, न जानना हानिकारक व विनाशकारी है। एक नेचर का नियम है कि जो दूसरे के काम आता है उसका विकास होगा, उसका हित होगा। जो दूसरों के काम नहीं आता, उसका विकास नहीं होता, उसके लिए विनाश का साथी बनकर हानि व दुख उठाना व विनाश होना जरूरी है। परन्तु यह नियम हम मनुष्यों को समझ नहीं आता। सिर्फ अपने लिए जीना, जन्म अपना यह है खोना। कुछ बुराई छोड़ने से हम हानि करने वाले पहले से कम जरूर हो जाते है, पापाचार कम हो जाता है परन्तु धर्म शुरू नहीं होता। श्रीमान दाता जी दूसरों के लिए सेवाकारी हुए उनके जीवन के उदाहरण पेश किए गए है। जीवन उच्च बनता, किसी के काम आ जावे। हाथों की शोभा किसी चांदी या सोने के कंगनों से नहीं परन्तु सेवाकारी होने में है। सेवाकारी लोगों की किस प्रकार नेचर में सहायता होती है, उसका उदाहरणों द्वारा वर्णन किया गया। गुरु महाराज फरमाते हैं कि मेरा काम वही कर सकता है जो उसके बदले कुछ न मांगे, कोई नौकरी ऐशो आराम। गुरु महाराज का मिशन नेचर के नियमों के अनुसार है। वह उन्नति करने व फैलने के बिना नहीं रह सकता। नेचर में अटल नियम काम करते हैं। जो दूसरों के लिए सहायकारी हैं उसकी नेचर में सहायता होना जरूरी है। जिसे नेचर के नियमों पर विश्वास नहीं वह गुरु महाराज का काम नहीं कर सकता। उसे पहचान नहीं सकता। ऐसे गुरु को हम ज्यादा से ज्यादा पहचान सकें। यह सभा भी बहुत प्रभावशाली रही। इसके बाद सभापति जी ने क्या हाजरीन को व क्या गुरुदेव राज जी के परिवार को धन्यवाद दिया। 750 रुपये यहां से दान प्राप्त हुआ। सहायकारियों की सहायता से यह दौरा काफी हद तक सफल रहा इसके बाद यह पार्टी वापिस चण्डीगढ़ के लिए रवाना हुई।

पिता जी की बरसी

श्रद्धेय पिता जी की 58 वीं बरसी वीर गुरभगत सिंह के बेटे पाली के घर उनकी फारम पर मनाई गई। बरसी की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी सैक्टररी देव धर्म मिशन ने करवाई। देव समाज के बानी भगवान देवात्मा की महिमा का गीत गाने के पश्चात Dev Samaj College of Education, Sector 36 ने मां के सम्बंध में “बदला अदा कैसे करूं मां तेरे एहसान का एहसानमंद हूं ताउम्र मां” का गीत बहुत सुन्दर स्वर में गाया जिससे श्रोतागणों के हृदयों पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा। कई जन उसी समय उनके पास उनकी सराहना करने पर मजबूर हो गए। और समा का वातावरण पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

गीत के बाद श्रीमान जी ने परिवार को मुबारक बाद देने के बाद माता पिता संतान के सम्बंध पर रोशनी डालते हुए पूज्य पिता जी फरिश्ता तहसीलदार के गुण वर्णन किये। उस समय के अंग्रेज गवर्नर Sir Henry Craik यह कहने पर मजबूर हो गए कि उन्होंने अपनी 40 साल की नौकरी में सरदार जी जैसा ईमानदार सरकारी नौकर नहीं देखा। उस फरिश्ते की कदर करते हुए अंग्रेज सरकार ने सरदार साहिब का खिताब, जागीर और (10) मुरब्बे उन्हें ईनाम में दिए।

उनकी ईमानदारी, मेहनत और शुक्रगुजारी, दूसरों के गुण देखने की आंख भी अति प्रशंसनीय थी। उनके परिवार को भी उनसे पूंजी मिली है। उन्हें पिछले 58 सालों से याद करते हैं। उनके बेटे सरदार गुरभगत सिंह D.I.G. और बेटी हितलता ने

उनसे पाई पूंजी के कारण सबसे बढ़िया Medals और ईनाम जीते। उनके पोते पोतियों उनके बच्चों में भी वह चिंगारी काफी हद तक मौजूद है। श्रीमान जी ने बहुत सुन्दर सुन्दर उदाहरण देकर माता पिता की देन तथा उपकारों को स्मरण करने को कहा।

उनके बाद उनकी बेटी हितलता ने अपने लासानी माता पिता के उपकारों का वर्णन किया और भरे दिल से कहा कि उनका जिस्म, दिमाग, दिल, शोहरत सब उनकी बदौलत है और प्रतिदिन उनकी फोटो को प्रणाम करके उनके उपकारों को याद करके उनसे आशीर्वाद की कामना करती हूं। उनसे जायदाद का कोई हिस्सा या नकदी न पाकर भी अच्छे भावों की बेपनाह दौलत पाई है।

उन्होंने पारिवारिक जनों से अपील की कि वह सदा अपने मां बाप के उपकार का स्मरण कर और उनकी खूबियों की तरफ ही ध्यान दें। इसी में उनका तथा उनकी संतान का भला है।

उन्होंने बताया कि अभी तक तो प्रायः सब लड़के लड़कियां अपने मां बाप का बहुत सम्मान करते हैं और बिमारी आदि में उनकी सेवा करते हैं। बहुत से मां बाप को अपनी संतान पर गर्व है। न केवल मां बाप हम दोनों की भी बहुत सेवा करते हैं हमारा जन्मदिन मनाते हैं और गिफ्ट भेंट करते हैं। उन्होंने अपने भाई गुरभगत की भी बहुत प्रशंसा की उन्होंने ही बरसी मनाने की प्रथा चलाई। बागबान फिल्म का जिकर करते हुए अमिताभ बच्चन के शब्द दोहराये।

“जो बच्चे अपने मां बाप को प्यार नहीं

करते, जो बच्चे अपने मां बाप को सहारा नहीं दे सकते, जो बच्चे अपने मां बाप को सम्मान नहीं दे सकते, उन्हें माफ नहीं किया जा सकता।”

नेचर का नियम है बच्चे मां बाप को भूल सकते हैं मां बाप बच्चों को नहीं भूल सकते।”

उन्हें विश्वास है कि मां बाप की रूहें परलोक से भी बच्चों को आशिर्वाद देती हैं। उनके आसपास घूमती हैं। काश! हम यह विश्वास पैदा कर सकें। अपने बच्चों की पोशाक सजावट पर कम ध्यान देकर उनकी आदतों, भावों पर अधिक ध्यान दे सकें।

इसके बाद उनकी पोती गुरमीत कौर ने भी अपने मां बाप के उपकारों का वर्णन किया। मां बाप की बदौलत इतने अच्छे भाई बहन मिले अंत में यह कह कर समाप्त किया

क्या है गंगा, क्या है यमुना,

क्या है तीर्थ, धाम,

क्या है हमें किसी ईश्वर की जरूरत

अगर हमारे पास है हमारी मां

पी. पी. एस. गिल ने थोड़े ही शब्दों में

अपने बड़े भाईयों के गुण ईमानदारी, मेहनत आदि के विषय में बताते हुए कहा कि वह सब मां बाप दादों की देन हैं।

अंत में बी. पी. एस. गिल वीर गुरभगत के बेटे ने बहुत ही सुन्दर शब्दों में कहा Sardar Sawan Singh was a man of sterling qualities in Honesty, Compassion & Simplicity. As Per Bhagwad Gita, he was a true Karam yogi in all respects.

उसने अपने पिता सरदार गुरचरन सिंह को याद करके कहा कि वह एक सच्चे पिता थे, उनकी याद में वह बरसी का कार्यक्रम उनके लगाए हुए बाग में करके उन्हें श्रद्धांजलि पेश करना चाहता था। उन्होंने इस उबड़ खाबड़ धरती का बाग में बदलाव किया। उसके लिए उन्हें कड़ा परिश्रम करना पड़ा। उनकी इच्छा थी कि यह सुन्दर बाग बगीचा कायम रहे। इसलिए उसने उसे एक बढ़िया Resort में बदल कर उनकी याद को ताजा रखना चाहा।

अंत में पारिवारिक जनों ने अपने दादा माता पिता की याद में 7600 रुपये दान किए और अति स्वादिष्ट भोजन खिलाकर विदा किया।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक “धर्म जीवन” ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

सम्पादक डा० विनोद खेड़ा

